तात्पर्य

श्रीभगवान् अर्जुन के गुरुपद पर आसीन हैं; अतः उनका कर्तव्य बनता है कि अर्जुन से पूछें कि क्या वह सम्पूर्ण भगवद्गीता को यथार्थ रूप में समझ गया। यदि वह न समझा हो, तो श्रीभगवान् किसी भी अंश का अथवा पूरी भगवद्गीता का फिर उपदेश करने को प्रस्तुत हैं। वास्तव में जो कोई श्रीकृष्ण अथवा उनके प्रतिनिधिरूप योग्य गुरु से भगवद्गीता को सुनेगा, वह अपना सम्पूर्ण अज्ञान नष्ट हुआ पायेगा। भगवद्गीता किसी कवि अथवा लेखक द्वारा रचित कोई साधारण पुस्तक नहीं है। यह साक्षात् परब्रह्म के मुखारविन्द की वाणी है। जो भाग्यवान् पुरुष श्रीकृष्ण अथवा उनके सच्चे परमार्थिक प्रतिनिधि के मुखपद्म से इस उपदेशामृत का श्रवण करता है, वह निःसन्देह अज्ञान से छूट कर मुक्त हो जाता है।

अर्जुन उवाच।
नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव।।७३।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **नष्टः**=नष्ट हो गया है; **मोहः**=मोह; **स्मृतिः**=स्मृति; **लब्धा**=फिर प्राप्त हुई; **त्वत् प्रसादात्**=आपकी कृपा से; **मया**=मुझे; **अच्युत**=हे कृष्ण; **स्थितः**=स्थित; **अस्मि**=हूँ; **गतसन्देहः**=सन्देह से मुक्त होकर; **करिष्ये**=पालन करूँगा; **वचनम्**=आज्ञा का; **तव**=आपकी।

अनुवाद

अर्जुन ने कहा, हे कृष्ण! हे अच्युत! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया और स्मृति फिर प्राप्त हो गयी है। इसलिए अब मैं संशय से मुक्त होकर दृढ़ता से स्थित हूँ; अब आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।।७३।।

तात्पर्य

अर्जुनरूप जीव का स्वरूप श्रीभगवान् की आज्ञानुसार कर्म करना है। उसे आत्मसंयम करना है। श्रीचैतन्य महाप्रभु कहते हैं कि जीव यथार्थ स्वरूप में भगवान् का नित्यदास है। अपने इस स्वरूपधर्म को भूल कर जीव प्रकृति की उपाधियों में फँस गया है, परन्तु भगवत्सेवा करने से वह फिर मुक्त भगवत्-दास हो सकता है। जीव का स्वरूप सेवा करना है; इसलिए यदि वह भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा नहीं करता तो उसे माया की सेवा करनी पड़ती है। भगवान् की सेवा करना उसकी स्वाभाविक स्थिति है, जबकि यदि वह माया की सेवा में लग जाय तो निश्चितरूप से बँधेगा। मोहवश जीव इस प्राकृत-जगत् की सेवा कर रहा है। वह काम और वासना में आनख-शिख बँधा हुआ है; फिर भी अपने को जगत् का स्वामी समझता है। इसी का नाम मोह है। मुक्त पुरुष में मोह नहीं रहता; वह श्रीभगवान् के आज्ञापालन के लिए स्वेच्छा से उनकी शरण में चला जाता है। जीव के लिए माया की सबसे बन्धनकारी कूटचाल यह धारणा है कि वह ईश्वर है। जीव